आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2657 • उदयपुर, सोमवार 04 अप्रैल, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

चन्द्रपुर, महाराष्ट्र में दिव्यांगों को राहत का उपक्रम

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 13 व 14 मार्च 2022 को पंजाबी सेवा समिति मूल रोड, चन्द्रपुर हुआ। शिविर सहयोगकर्ता पंजाबी समाज सेवा समिति रही। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 475, कृत्रिम अंग माप 186, कैलिपर्स माप 32, की सेवा हुई तथा 16 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती राखी कंचन वाल (महापौर), अध्यक्षता श्रीमान किशोर जी गेवार (विधायक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् विक्रम जी शर्मा (पूर्व अध्यक्ष, पंजाबी समाज), श्रीमान् अजय जी कपूर (अध्यक्ष, पंजाबी समाज), श्रीमान् कुकू सहानी जी (पूर्व अध्यक्ष) रहे।

डॉ. विजय कार्तिक जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. नेहांश मेहता (पी.एन.डो.), श्री नरेश जी वैष्णव (टेक्निशियन) शिविर टीम

में श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव (सहायक), श्री हेमन्त जी मेघवाल (नागपुर आश्रम प्रभारी), श्री कपिल जी व्यास (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (फोटोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

हांसी, हिसार (हरियाणा) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 13 मार्च 2022 को बजरंग आश्रम, हांसी जिला हिसार में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता मानव जागृति मंच, हांसी (हरियाणा) रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 210, कृत्रिम अंग माप 27, कैलिपर माप 29 की सेवा हुई तथा 42 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् विनोद जी भियाना (विधायक, हांसी), अध्यक्षता श्रीमान् मदन मोहन जी सेठी (समाज सेवी), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् श्याम जी मखीजा (समाज सेवी पूर्व

सभापति, हांसी), श्रीमान् सतीश जी कालरा (प्रधान मानव जागृति मंच), श्रीमान् जगदीश जी जागड़ा (समाज सेवी दानदाता), डॉ. रामस्वरूप जी यादव (समाज सेवी) रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. गौरव जी तिवारी (पी.एन.डो), श्री नाथू सिंह जी (टेक्निशियन) शिविर टीम में श्री लाल सिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री रामसिंह जी (आश्रम प्रभारी), श्री मनीश जी हिन्डोनिया (सहायक), श्री बहादुर सिंह जी, श्री सत्यनारायण जी (प्रचारक सहायक) ने भी सेवायें दी।

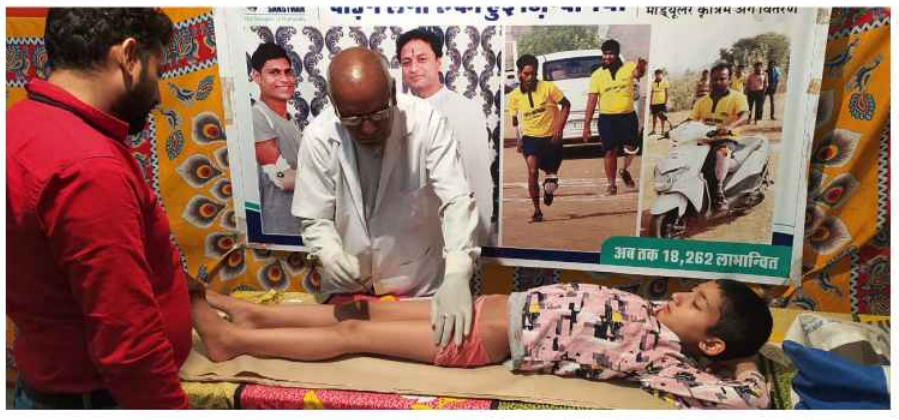

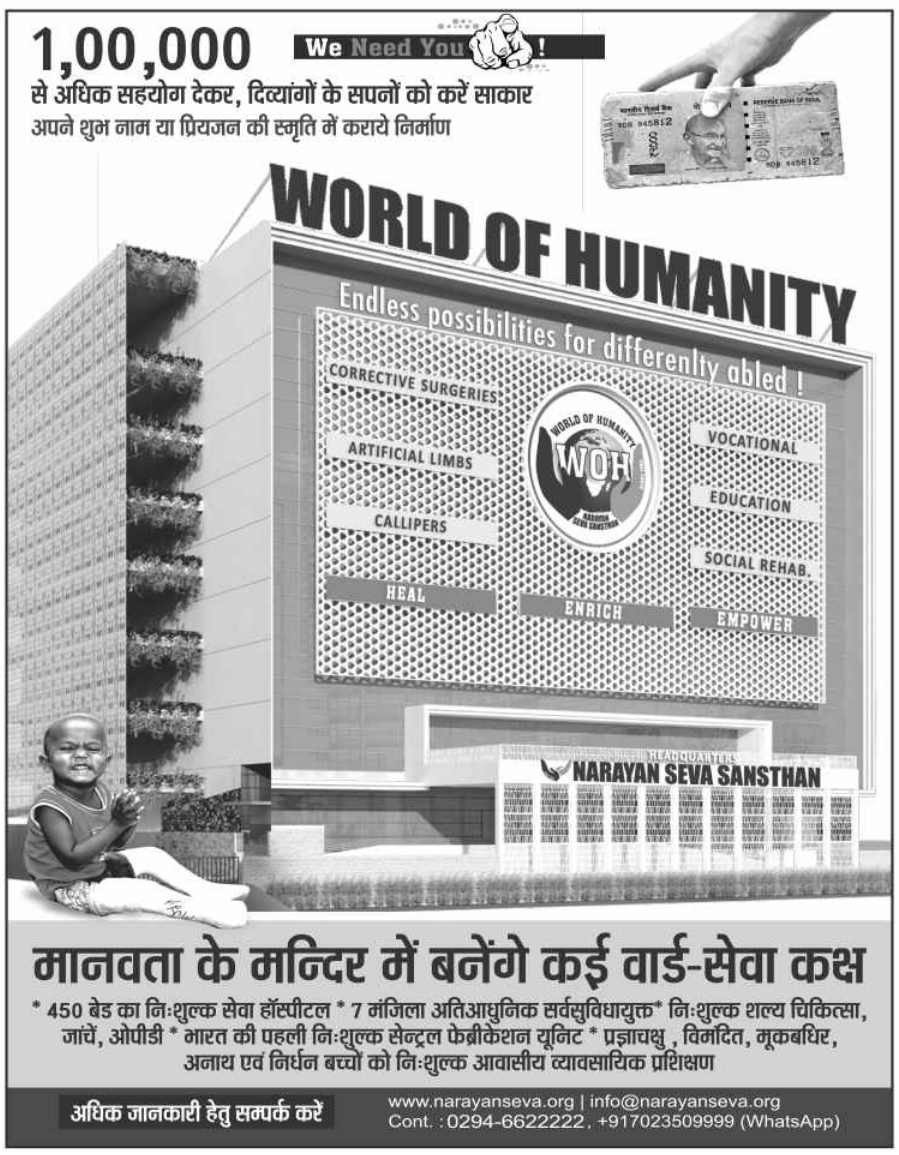

प्रज्ञाचक्षु शिव को सहारा

मेरा नाम शिवलाल है। में अपने माता पिता और एक बच्चे के साथ में रहता हूं। मुझे दिखाई नहीं देता है। मैं उदयपुर के कारखानों में काम करता था, वाहन भी चला लेता था पर 19–20 साल की उम्र में मेरी तबियत खराब हुई और मुझे कम दिखाई देने लगा पूरे शरीर में कमजोरी हो गई। 5 साल से मुझे बिल्कुल भी दिखाई नहीं देता।

दृश्टिबाधिता के कारण ही मेरी पत्नी मुझे छोड़कर चली गई, मेरे ससुर जी ने उससे कहा कि यह अंधा तुझे क्या खिलाएगा और कैसे रख पाएगा। वे पत्नी को अपने घर लेकर चले गए और जगह नाते दे दिया। मेरे दो बच्चे हैं, एक लड़का व लड़की.... मेरी लड़की मेरी पत्नी के पास व लड़का मेरे साथ रहता है। लड़का दूसरी कक्षा में पढ़ता है, इलाज के लिए उदयपुर के सभी हॉस्पीटलों में गया परन्तु नतीजा शून्य रहा। आंखो में बार–बार दवा डालने से दाँत भी गिर पड़े। पिताजी ही हम सब को सम्भाल रहे हैं।

अभी उनकी भी स्थिति ठीक नहीं होने के कारण बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। गांव में नारायण सेवा संस्थान की और से केम्प लगा मैं भी वहां गया। वहाँ से मुझे व मेरे परिवार के लिए 1 महीने का राशन मिला। जिसमें 2 किलो तेल, 10 किलो आटा, चावल, नमक, हल्दी, मिर्च, चाय, शक्कर और कम्बल आदि थे। संस्थान परिवार को बहुत–बहुत धन्यवाद।

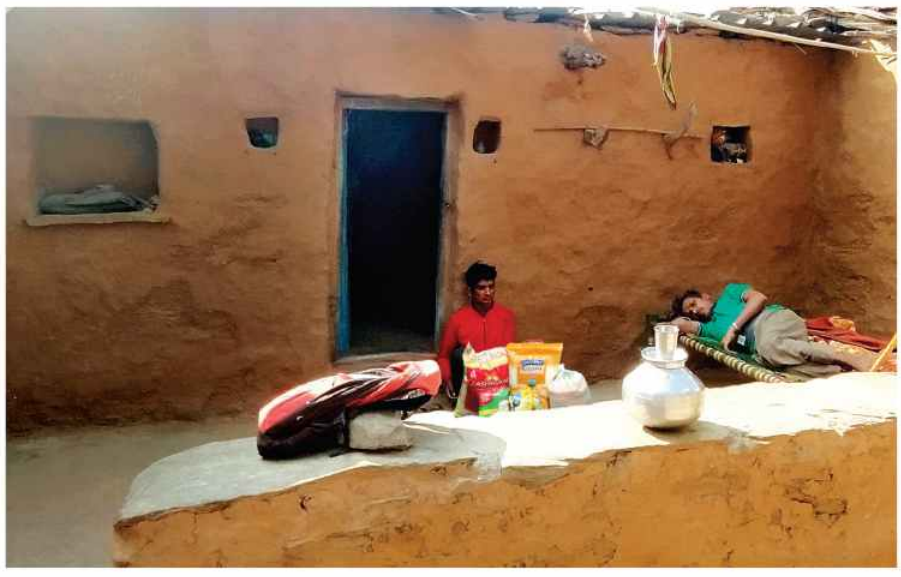

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

जीवन में गुण भी वताया करो। थारा में या कमी, थारा में या कमी अरे कमी कटे देखो ? भगवान ने तो ऐसे अनार, एक ऐसो अनार रो फल है वी में जाणे कतरा अनार यूं वने भी झिल्ली ढ़क राखीया है। ये देखो दाणा बिखर ग्या, एक–एक मोती रा दाणा। करोड़ों मोतियों रा दाणा फेफड़ा में वे। मैं काले ही पढ़ रीया थो। अरबों फुप्पस होते हैं, ऐसे मोतियों रा दाणा होते हैं। अच्छे बीज बोवांगा तो अच्छो फल मिलेगा। देखो केला रो अच्छो बीज बोयो तो केला रा झुमका लाग्या।

जब खड़े रहते हैं मानव मंदिर के बाहर गेट पर लगता है कितने दूर–दूर से दिव्यांग आ रहे हैं। डॉक्टर साहब कितने प्रेम से इनको देख रहे हैं। और एक माई तो गाबा री गांठा भी बांध न लाईकी अटे चद्दर मिले की नी मिले ? तकयो मिले की नी मिले ? सब मिलेगा अटे। आप तो खाली पैरवा रा कपड़ा लेन आ जाओ। आप तो खाली रेलवे स्टेभान पे पधार जाओ। वटे भी आपरो दिव्यांगता रो प्रमाण पत्र और आपरा पया नी लागेगा। आपरे साथ वाले रा भी आधा पया लागेगा। और रेलवे स्टेभान आता ही, ये बस ऐम्बुलेंस, बसां मिल जावे नारायण सेवा री। आप रो तिलक वेई रियो है, आप रे आता ही चाय और पोया रो नाभतो वेई रियो है। आप माणा भगवान हो, आप माणा ईभवर हो, आप माणा परमात्मा हो। अरे ! जीमने वाला महान होता है, मेजबान नहीं। जो आपके घर का पानी पी रहे है वो महान है।

बड़े भाग पाहुन घर आया,
बंद न कर देना अपने घर के दरवाजे।
न मालूम कब, कोई पाहुन घर आये।
रिक्त न कर देना अन्तर की रस गगरी,
न मालूम कब कोई, प्यासा स्वर आये।

दो प्रज्ञाचक्षु बने जीवन साथी

दिव्यांगों के चेहरे पर मुस्कान सजाने वाले सामूहिक विवाह में गरीब परिवार का एक जोड़ा नेत्रहीन भी था। नीमच निवासी मोहन कोई काम सीखने की ललक लेकर दो वर्श पूर्व जोधपुर गया था। वहां अंध विद्यालय में उसने नेत्रहीन संगीत प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। अपनी प्रस्तुति से पहले पूजा के सुरों को सुन ..... उसके माधुर्य का कायल हो गया। पूजा को भी मोहन का गीत भा गया। प्रतियोगिता के बाद दोनों की पहली मुलाकात में एक–दूसरे की और आकर्शित हो गए और परस्पर चाहने लगे। अपने–अपने घर लौटने के बाद घंटों मोबाइल पर बात होने लगी। दोनों के बीच जीवन का हमसफर होने की सहमति बनी और परिजनों को अपने निर्णय की जानकारी दी। परिवार की गरीबी विवाह के आयोजन में बाधा थी। कुछ ही माह पूर्व इन्होंने नारायण सेवा संस्थान से सम्पर्क किया। जिसने उन्हें उनके सपने को मूर्त रूप दे दिया।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मित्ति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

वाणी को नीतिकारों ने, भक्तों ने और सामाजिकों ने अमोल कहा है। वाणी का अर्थ भाषा नहीं है। भाषा तो कोई भी हो सकती है, पर वाणी का प्रभाव अलग ही होता है। किसी भी भाषा में आप और हम बोलें पर उसकी शब्दावली पर विशेष ध्यान दिया जाना अपेक्षित है। यह श्रेष्ठ शब्दावली ही वाणी का स्तर निर्धारित करती है। शब्दों का श्रेष्ठ व सटीक उपयोग वाणी को निर्मल व प्रभावी बनाता है। वाणी में मधुरता तो हो ही वह अमोल है। वाणी में अपनाया हो तभी वह अमोल है। वाणी में सत्यता हो तभी वह अमोल है। हम कई बार किसी भाषा को समझते नहीं है किन्तु वक्ता के भावों के कारण उसका आशय समझ में आ जाता है। इसका प्रभाव कारण है वाणी का सम्प्रेषण। वाणी में जब अच्छी शब्दावली का उपयोग होगा तो वक्ता और श्रोता दोनों के संस्कारों का परिमार्जन होना निश्चित है। यह परिमार्जन ही वाणी को अमूल्य बनाता है।

कुछ काव्यमय

वाणी को अनमोल कर,
बोले वही सुजान।
वाणी में शब्दावली
पर हो पूरा ध्यान।
गरिमा बढ़ती शब्द से,
भावों में गहराई।
सोचो, समझो वाणी को
अमोल बनाओ भाई।

अवसर बहुतेरे

किसी गांव में एक कुम्हार रहता था। वह बहुत अच्छे और सुन्दर मिट्टी के बर्तन बनाता था।उसने चार घड़े बनाये। वे बहुत सुन्दर और बड़े थे। बावजूद इसकेअन्य बर्तन तो बिक रहे थे लेकिन उनका कोई खरीददार नहीं आ रहा था। इस बात से चारों बहुत दुखी थे। वे चारों खुद को बेकार समझने लगे थे। एक समय ऐसा भी आया जब वे चारों चारों अकेले रह गए। चारों आपस में बात करने लगे।

पहला बोला, "मैं एक बड़ी और सुन्दर मूर्ति बनना चाहता था ताकि किसी अमीर के घर की शोभा बनता। लेकिन एक घड़ा ही बन कर रह गया जिसे कोई नहीं पूछता है।"तभी दूसरा बोला, मैं एक दीया बनना चाहता था ताकि रोज जलता और चारों ओर रोशनी बिखेरता। तभी तीसरे घड़े ने कहा, "किस्मत तो मेरी भी ख़राब है। मित्रों, मुझे पैसों से बहुत प्यार है। मैं एक गुल्लक बनना चाहता था। लोग मुझे खुशी से ले जाते और हमेशा पैसों से भरा रखते। अपनी बात कहने के बाद तीनों चौथे घड़े की तरफ देखने लगे। चौथा घड़ा मुसकुराया और बोला, "आप तीनों क्या समझते हो, क्या मैं दुखी नहीं हूँ? दोस्तों! मैं तो एक खिलौना बनना चाहता था ताकि जब बच्चे मुझसे खेलते तो बहुत खुश होते और उनकी प्यारी सी हंसी और खुशी को देखकर मैं भी खुश होता। लेकिन कोई बात नहीं।

हम एक उद्देश्य में असफल हो गए तो क्या। दुनिया में अवसरों की कोई कमी नहीं है। एक गया तो आगे और भी अवसर मिलेंगे। बस धैर्य रखो और इंतजार करो । एक महीना बीता ही था कि ग्रीष्म ऋतु आ गई। ठंडे पानी की जरुरत के लिए लोगों ने घड़े खरीदने शुरू कर दिए। चारों घड़े बड़े और सुन्दर तो थे ही लोगों ने ऊँचे दामों में उन्हें खरीद लिया।

आज वे सैकड़ों लोगों की प्यास बुझाते हैं और बदले में खुशी और दुआएं पाते हैं। दुनिया में बहुत से ऐसे लोग हैं जो वह नहीं बन पाते जो वे बनना चाहते हैं। ऐसा होने पर लोग खुद को असफल महसूस करते हैं और हमेशा अपनी किस्मत को दोष देते रहते हैं। मित्रों! क्या हुआ यदि हमने एक अवसर गवां दिया। दुनिया में अवसरों की कमी थोड़े ही है। यदि चारों ओर देखा जाये तो अवसर ही अवसर दिखाई देंगे। कोई एक अवसर आपको सफलता जरूर दिला देगा। हमेशा धैर्य बनाये रखो। धैर्य रखकर लगातार प्रयास करने वाले लोग अंत में सफल जरूर होते हैं। — **कैलाश 'मानव'**

आत्मसंतोष ही धन है

आत्मसंतोष ही सबसे बड़ा धन है। आवश्यकता से अधिक संग्रहित धन क्लेश का कारण बनता है, जो परिवार में विघटन लाता है। धन की तीन गति होती है—भोग, दान और नाश। यदि प्रथम दो गति धन को प्राप्त नहीं होती, तो वह धन अवश्य ही तीसरी गति को प्राप्त हो जाता है।

एक व्यक्ति के पास थोड़ी—सी जमीन थी। वह उस पर खेती करके अपना जीवन—यापन करता था। एक दिन साइबेरिया से एक व्यक्ति उसके पास

आया और कहने लगा— तुम साइबेरिया में जमीन खरीद लो, वहाँ जमीन कौड़ियों के दाम बिकती है। इस पर उस व्यक्ति ने अपनी थोड़ी—सी जमीन, जो उसके पास थी, बेच दी और साइबेरिया चला गया। वहाँ पहुँच कर लोगों से जमीन खरीदने के बारे में बात की। लोगों ने उसे बताया—तुम्हें जितनी जमीन चाहिए, उतनी जमीन तुम ले सकते हो, इसके लिए तुम्हें सूर्योदय होते ही इस स्थान से भागना है। जितनी जमीन पर तुम कदम रखोगे अर्थात् जहाँ तक तुम भाग कर जाओगे वो जमीन तुम्हारी होगी। परन्तु ध्यान रहे कि सूर्यास्त होने तक तुम्हें वापस इसी शुरुआती जगह पर वापस आना होगा। रात को उसने अपनी दूसरे दिन की पदयात्रा की व्यवस्था के बारे में सोचा और खाने—पीने आदि की व्यवस्था की। दूसरे दिन सूर्योदय की पहली किरण के साथ ही उसने अपनी पदयात्रा शुरू की। दोपहर 12 बजे तक वह दौड़ता चला गया, उसके मन में 'और जमीन ले लूँ' का भाव लगातार चलता रहा। वह मन ही मन सोचता रहा कि यहाँ के लोग कितने भोले और अच्छे हैं कि इतनी सस्ती जमीन दे देते हैं। बस दौड़ो और जमीन अपने नाम कर लो। 12 बजे वह लौटने के बारे में सोचने लगा, लेकिन अचानक उसके मन में और अधिक जमीन प्राप्त करने का लोभ जागृत हो गया तथा वह और आगे आगे जाता रहा। उसे भूख—प्यास की भी परवाह नहीं रही। उसने भोजन—पानी को बोझ समझ कर फेंक दिया, ताकि ज्यादा से ज्यादा दौड़ कर ज्यादा से ज्यादा जमीन ले पाए।

दोपहर दो बजे उसे विचार आया कि मुझे लौटना भी है और अपनी वापसी की यात्रा में तेज—तेज दौड़ने लगा तथा हाँफने लगा। दूर—दूर से उसे वे लोग दिखाई देने लगे, जो सुबह उसका उत्साहवर्द्धन कर रहे थे, अब वही लोग उससे कह रहे थे—जल्दी आओ, जल्दी आओ। बहुत अच्छे! तुम पहुँच जाओगे। वह सोचने लगा—कैसे भले लोग हैं, जो अपनी जमीन ऐसे ही दे रहे हैं और चाहते हैं कि मैं उस शुरुआती जगह पहुँच जाऊँ और मुझे इतनी सारी जमीन मिल जाए। इनसे श्रेष्ठ लोग और कहाँ मिलेंगे?

वह हाँफता—दौड़ता उस जगह से मात्र पाँच कदम दूर तक पहुँच कर गिर गया, लेकिन फिर भी सूर्य की अंतिम किरण तक उसने रेंगते—रेंगते अपनी अंतिम सीमा रेखा पर हाथ लगा दिया, किंतु यह क्या, उसी समय उसके प्राण—पखेरू उड़ गए। अब वे भले लोग हँसते हुए कहने लगे कि यहाँ आज तक किसी भी व्यक्ति ने जीवित रूप में जमीन का एक टुकड़ा अपने नाम पर नहीं किया है। सभी लोग तृष्णा में मरे जा रहे हैं।

आज के मानव की भी यही प्रवृत्ति है। वह अपनी जरूरतों से ज्यादा के संग्रह में लगा है। यदि हमारे पास आवश्यकता से अधिक धन संग्रहित है, तो उसे लोगों की मदद में लगा देना चाहिए। यही उस धन का सदुपयोग है। दान करने में संशय नहीं होना चाहिएं मनुष्य को सदैव पूर्ण विश्वास के साथ दान करना चाहिए।

—सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

डाक्टर ने अपने हाथों से आंतों का एक सिरा उठा कर मरीज के पेट पर रख दिया, आंत जगह जगह से फट गई थी, उसे उठा कर वे जगह जगह उसकी सिलाई करने लगे। जगह जगह खून, चिपचिपा पदार्थ, आंतें वगैरह देखना हर किसी के लिये आसान नहीं होता, कई मेडिकल छात्र तक पहली बार शरीर की चीर—फाड़ देखकर बेहोश हो जाते हैं मगर कैलाश के साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ, उल्टे वह सोच रहा था कि हर व्यक्ति को एक बार तो इस तरह ऑपरेशन होते देखना ही चाहिये ताकि उसे मानव शरीर की वास्तविकता का एहसास हो। कैलाश नियमित रूप से अस्पताल जाता था मगर सरकारी कामकाज, अन्य व्यस्तताओं के कारण कभी नहीं भी जा पाता था। ऐसे ही एक दिन जब वह अपने घर पर सो रहा था, तब रात के 11 बजे के आसपास किसी ने दरवाजा खटखटाया। कैलाश की नींद खुल गई और वो उठ बैठा, मकान किराये का था, वो सोचने लगा इतनी रात कौन दरवाजा खटखटायेगा, सोचा जरूर किसी पड़ोसी के यहां कोई आया होगा, दरवाजे की खटखटाहट जारी रही तो वह उठा। नींद में ही उंघते हुए उसने दरवाजा खोला तो सामने एक व्यक्ति खड़ा था। वह उससे कुछ पूछे इसके पहले ही आगन्तुक बोला पड़ा—आज आप अस्पताल नहीं आये, मेरी बेटी आपको याद कर रही है और बहुत रो रही है। वह रोटी भी नहीं खा रही है और बराबर कहे जा रही है कि भाई साहब नाराज हो गये लगते हैं, इसीलिये नहीं आये।

आगन्तुक की ऐसी बात सुन कैलाश की नींद हिरन हो गई, वह जूते पहन अस्पताल जाने लगा तो कमला की भी नींद उड़ गई, वह अन्दर से ही आवाज दे रही थी, कौन आया है, क्या हुआ। कैलाश ने अन्दर जाकर उसे कहा कि वह अस्पताल जाकर आता है, तुम सो जाओ। कैलाश उस व्यक्ति के पीछे पीछे अस्पताल पहुँचा। उसके 7—8 साल की बेटी थीं कैलाश को देखते ही वह प्रसन्न हो गई। कैलाश मन ही मन सोचने लगा—यह कैसा सम्बन्ध है, न जान न पहचान, यहां तक कि इनका नाम तक नहीं जानता था फिर भी इस तरह का स्नेह देख कर वह अभिभूत था। अब उसने अपने मन में ठान ली कि वह नियमित रूप से अस्पताल जाया करेगा।

अक्षय तृतीया पर पाएं सुख-समृद्धि और सौभाग्य

अक्षय तृतीया पर्व 3 मई को पूरे देशभर में मनाया जाएगा। ये वह त्योहार जो हमें अपने सद्कर्मो का कई गुना फल देता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन दान–पुण्य करना चाहिए। जिससे जीवन में सुख और समृद्धि की प्राप्ति हो सके।

इन चीजों के दान से मिलता है सौभाग्य

जलपात्र दान – वैशाख के महीने में लोगों को पेयजल उपलब्ध कराना पुण्य का काम है। अक्षय तृतीया के दिन जल से भरे पात्र का दान करना परम पुण्यदायी माना गया है। इसके लिये आप मटका या फिर कलश का दान कर सकते हैं। जल पात्र हमेशा भरा हुआ ही दान करें। साथ ही पशुओं को पानी पिलाना काफी पुण्य का काम माना गया है। माना जाता है कि अक्षय तृतीया के दिन जल से भरे पात्र का दान करने से आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा की स्थिति मजबूत होती है।

अन्न दान– किसी प्यासे को पानी पिलाना या भूखे को भोजन करावाना बड़े ही पुण्य का काम है। अक्षय तृतीया के दिन भोजन दान करने से नवग्रह शांत होते है। देवताओं की कृपा भी मिलती है। जीवन में सुख और समृद्धि प्राप्त होती है। अक्षय तृतीया के दिन ज्वार, सत्तू , तिल और चावल का दान महत्वपूर्ण हैं। शास्त्रों में गेहूं को सोने के समान महत्वपूर्ण माना गया है। इसलिए अन्न दान महत्वपूर्ण है। वस्त्र दान– अक्षय तृतीया के दिन वस्त्रों का दान करना भी बेहद शुभफलदायी माना गया है। इस बार अक्षय तृतीया बेहद खास शुभ योग में होने वाले वस्त्र दान का महत्व और भी बढ़ जाता है। अक्षय तृतीया को सफेद और चमकीले वस्त्रों का दान करना चाहिए। मान्यता है कि वस्त्रों को दान करने से जातक का शुक्रग्रह मजबूत होता है, इसे आपके जीवन में भौतिक सुविधाओं और सुखद वैवाहिक जीवन के लिए सबसे ज्यादा जरूरी माना जाता है।

4 तरीकों से बढ़ाएं अपनी याद्दाश्त

अधिक उम्र में भी याद्दाश्त ठीक रखने के लिए दिमाग को एक्टिव रखने की जरूरत होती है। इसके लिए कुछ तरीके अपनाएं–

व्यायाम करें – एक्सरसाइज करने से न सिर्फ शरीर, बल्कि दिमाग भी स्वस्थ व सक्रिय रहता है। व्यायाम से शरीर में रक्त व ऑक्सीजन का सर्कुलेशन सही तरीके से रहता होता है। अतः कॉर्डियों, स्विमिंग, रनिंग, वॉकिंग, एरोबिक्स, जो भी संभव हो उसे रूटीन में शामिल करें।

कुछ नया सीखें – पेटिंग, म्युजिक, भाशा जैसा कुछ नया सीखने की कोशिश करें। जब कुछ नया सीखते हैं दिमाग के सेल्स एक्टिव होते हैं। इससे भी दिमाग सक्रिय होता है। इससे रचनात्मकता भी बढ़ती है।

गाना गाए और सुनें – म्युजिक से दिमाग व्यस्त होता है। यह दिमाग को सक्रिय बनाता और अच्छी फीलिंग देता है।

सवाल पूछें – सवाल पूछने से न केवल ज्ञान व याद्दाश्त बढ़ते हैं, बल्कि दिमाग भी सक्रिय होना शुरू कर देता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

आप गर्मी में बिना पंखे के रहते हैं। बहुत त्यागी हैं, बहुत बैरागी हैं। आपके जो शिष्य देवेन्द्र मुनि जी मा. सा. ये युवा आचार्य हैं। नगर में महाराष्ट्र के नगर में रहने वाले पूज्य जैन धर्म के सूरज, मैंने कहा कि आप एक जनवरी को जो शिविर जसवन्तगढ़ विद्यालय में कर रहे हैं, उसमें समय पधारिये। आप प्रेरणा देंगे, ये लोग माँस–मंदिरा छोड़ेंगे, ये लोग बीड़ी छोड़ेंगे, तम्बाकू छोड़ेंगे, हुक्का छोड़ेंगे, सिगरेट इन लोगों ने कभी देखी नहीं। गाँव के गरीब लोग हैं, जो बीड़ी पीते हैं और बीड़ी में बहुत तम्बाकू जाती है। पान मसाला कभी–कभी खा लेते हैं। दोनों मा.सा. ने कहा कि हम जरूर आयेंगे, स्थानक वाले जो अध्यक्ष थे– उन्होंने कहा कि हम लेकर आयेंगे। आप बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। कमला जी भी उस समय साथ में थी, प्रशांत भैया और कल्पना भी साथ में थी। रविवार 1 जनवरी 1989 में जसवन्तगढ़ पहुँचे। 1500 से अधिक महानुभाव, भाई–बहनें राम–राम सा, जय जिनेन्द्र, जय श्री राम, बजरंग बली की जय।

छम छम नाचे रे वीर हनुमान, वीर हनुमान।।

हृदय में नाचना चाहिये। क्या खोया–क्या पाया? सबकुछ पाया ही पाया है। कुछ खोया भी नहीं, कुछ चीजें जन्म से मुफ्त में मिली है। निःशुल्क दीजिये, 63 साल की उम्र तक बहुत कुछ काम करवा दिया। भगवान ने कहा– कैलाश तेरा मन तेरे पास रखता हूँ। खूब काम कर, हाथ पाँव से सत् कर्म कर। 1989 में भगवान की परम कृपा से 42 साल की उम्र में, कल 2 जनवरी को जन्म दिन है, 89 को 42 साल पूरे हो जायेंगे। गिरधारी कुमावत, उनके छोटे भाई श्याम जी कुमावत ने बहुत साथ दिया। आपका ऋण चुका नहीं सकता। आपकी वजह से झुंझुनू के बाई जी मिले।

आपकी वजह से मनोरमा जी पारीक महोदया जी मिली, बहुत साथ दिया आपने, राम–राम कर रहे हैं, आदिवासी लोग गले मिल रहे हैं। सामान साधक उतार रहे हैं, ये पोष्टिक आहार 14 बोरी गेहूँ के आटे का, जौ का मिक्स किया हुआ, सूकड़ी विस्मित नेत्रों से पी. जी. जैन साहब देख रहे हैं। 16 बोरी गेहूँ और जौ सोयाबीन तेल मफत काका ने दिया हम कहाँ से लाये? महाराज ये पोस्ट ऑफिस की सर्विस, टेलिफोन कम्युनिकेशन की सर्विस, उस समय उदयपुर आये थे 1979 में, ये 1989 की बात है, 10 साल हो गये। पी.एण्ड.टी. कॉलोनी ये सब भगवान ने दिया, प्रशांत का जन्म 1973 में कल्पना का जन्म 1970 में, कमला जी का विवाह 1968 में ये सब ये सब भगवान की कृपा है और भगवान को सौंप दो।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 407 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023